भाकृअनुप
ICAR

190

जीरे की उन्नत खेती

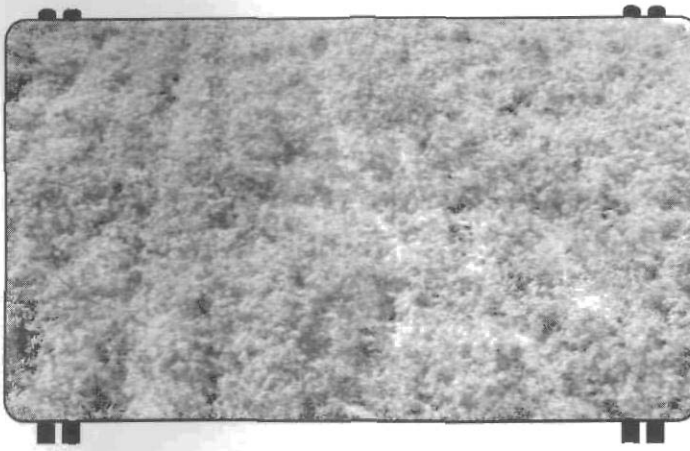

डॉ. युद्धवीर सिंह
डॉ. राजसिंह
डॉ. भगवान सिंह

तकनीकी हस्तांतरण, प्रशिक्षण एवं उत्पादन आर्थिकी विभाग

केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

जोधपुर – 342 003

जीरे की उन्नत खेती

जीरे का मसालों में महत्वपूर्ण स्थान है। यह फसल कम समय में पक जाती है व इसकी खेती से लाभांश भी अच्छा प्राप्त किया जा सकता है।

उन्नत किस्में :-

आर. जेड. –19, आर. जेड़.–209 व जी.सी.–4 अच्छी किस्में हैं। इन किस्मों में देशी किस्मों की तुलना में उखटा रोग का प्रकोप कम रहता है। इनका बीज बड़ा होता है व फसल जल्दी पकती है तथा 25–30 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

भूमि एवं उसकी तैयारी :-

जीरे की खेती के लिए दुमट या बलुई दुमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। यदि भारी मिट्टी का खेत है और नमी की कमी हो तो पहले सिंचाई कर दी जानी चाहिए। क्षारीय भूमि में वर्षा से पूर्व खेत में 3 से 5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से जिप्सम अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। जिप्सम का उपयोग तीन वर्ष में एक बार करना चाहिए। फसल की बुवाई के लिए दो बार हैरो चलाकर एवं पाटा लगाकर खेत समतल कर देना चाहिए।

बीज की मात्रा :-

जीरे के लिए 12–15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बुवाई :-

जीरे की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह से अन्तिम सप्ताह के बीच कर देनी चाहिए। बीजों को क्यारियों में छिड़क कर थोड़ी सी मिट्टी ऊपर डाल दें। अनुमानतः बीज मिट्टी के नीचे हाथ की छोटी अंगुली के नाखून से ज्यादा नहीं रहना चाहिए। अन्यथा अंकुरण में बाधा उत्पन्न हो सकती हैं किसान भाईयों की अक्सर यह समस्या रहती है कि जीरे का अंकुरण सही नहीं होता है इसका मुख्य कारण यह है कि वे पहले बीजों को बिखेर कर फिर क्यारियां बनाते हैं जिसके कारण बीजों का वितरण समान नहीं रहता व उन पर मिट्टी अधिक आ जाती हैं इन बातों को ध्यान में रखकर बुवाई करनी चाहिए। सम्भव हो सके तो जीरे की बुवाई पंक्तियों में 30 सेमी का अन्तराल रखते हुए करनी चाहिए।

खाद की मात्रा :-

फास्फोरस व नत्रजन खाद 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना चाहिए। फास्फोरस की समस्त मात्रा एवं नत्रजन खाद को 10 किलोग्राम बुवाई के समय 10 किलोग्राम बुवाई के 30–35 दिन तथा 10–15 किलोग्राम 50–51 दिनों पश्चात् सिंचाई के साथ देना चाहिए। अगर पिछली खरीफ की फसल में गोबर की खाद दी गयी है तो अतिरिक्त खाद देने की आवश्यकता नहीं है।

सिंचाई :-

जीरे की बुवाई के बाद ही प्रथम सिंचाई कर दीजिए। पानी देते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पानी का बहाव तेज न हो। दूसरी सिंचाई

एक सप्ताह के अन्तराल पर करें। आमतौर पर अंकुरण दूसरी सिंचाई के बाद ही नजर आता है। जमीन पर पपड़ी आती नजर आये तो दूसरी सिंचाई 3–4 दिन बाद ही कर देनी चाहिए। इन दो सिंचाई के बाद तीन और सिंचाई की आवश्यकता होती है।

रोपण व छंटनी :-

जब जीरे के पौधों की ऊचाई चार पांच से.मी. की जाये तब इनकी रोपण व छटाई का कार्य कर दिया जाये। प्रत्येक पौधे के बीच की दूरी 15 सेमी. रखनी चाहिए। जीरे की अच्छी फसल के लिए रोपण के पश्चात् करीब दो बार निराई व गुड़ाई अवश्य करें।

फसल चक्र :-

एक खेत में लगातार जीरे की फसल नहीं लेनी चाहिए। ऐसा करने से बीमारियां अधिक लगने की सम्भावना रहती है। उपज भी प्रभावित होती है। अतः जीरे की फसल एक ही खेत में दो वर्ष से अधिक नहीं लेनी चाहिये।

खरपतवार नियन्त्रण :-

जीरे की फसल में खरपतवारों के नियन्त्रण के लिए बुवाई से पहले फ्लूक्लोरालीन की 1.0 लीटर मात्रा समान रूप से छिड़क देनी चाहिए। इसके पश्चात् 20–25 दिन पर ओक्साडाइजरिल खरपतवार नाशी की 50 से 75 ग्राम सक्रिय तत्व की मात्रा को पानी में घोलकर छिड़काव कर देना चाहिए इसके बाद 35–40 दिन पर एक गुड़ाई कर देनी चाहिये।

पादप संरक्षण :–

कीट नियंत्रण :

मोयला : इसके आक्रमण से फसल को काफी नुकसान होता है। यह कीट पौधे के कोमल भाग से रस चूस कर हानि पहुंचाता है तथा इसका प्रकोप फसल में फूल आने के समय प्रारम्भ होता है। इसके नियंत्रण हेतु मेलाथिओन 50 ई सी या डायमिथोएट 30 ई सी एक मिली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 10 से 15 दिन बाद करें।

बीमारियों से बचाव :–

जीरे की फसल को तीन प्रमुख रोग छाछिया (पाउडरी मिल्ड्यू), झुलसा (ब्लाईट) व विल्ट (उखडा) से काफी नुकसान होता है इनकी रोकथाम के लिए निम्न उपचार करें–

1. खेत में फसल चक्र अपनायें।
2. बीजों को बुवाई से पूर्व कार्बेन्डिजिम से दो ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करके बायें।
3. फसल की 30–35 दिन की अवस्था पर मेन्कोजेब के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। यह फसल को झुलसा के प्रकोप से बचाता है।
4. जब फसल 40–45 दिन की हो जाय तो डिनोकेप या कैलीकसीन (0.1 प्रतिशत) 25 किग्रा. प्रति हैक्टेयर गन्धक के चूर्ण का भुरकाव भी काफी प्रभावी रहता है।
5. जिस खेत में उखटा रोग का प्रकोप हो, उसमें मई माह में तेज गर्मी के दौरान 2.5–3 टन सरसों की फलकटी एक हैक्टर खेत में 30 सेमी. तक

मिलाकर एक पानी देना चाहिए। ऐसा तेज गर्मी के दौरान करने से जमीन के अन्दर उखटा रोग की फफूंद नष्ट हो जाती है।

कटाई :-

जब फसल पक जाय तो काट कर अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। फसल के ढ़ेर को जहां तक संभव हो सके पक्के फर्श पर धीरे–धीरे पीटकर दानों को अलग कर लेना चाहिए। दानों से धूल, हल्का कचरा एवं अन्य पदार्थ को निकाल कर साफ कर लेना चाहिए। दानों को अच्छी तरह सुखाकर बोरियों में भरना चाहिए। नमी रहने की दशा में इनमें फफूंद का प्रकोप हो सकता है।

उपज :-

उपर्युक्त उन्नत कृषि विधियां अपनाने से 6 से 10 क्विंटल प्रति हैक्टेयर जीरे की उपज प्राप्त की जा सकती है। एक हैक्टेयर में कुल खर्च 10–12 हजार रूपया आता है तथा शुद्ध लाभ 25 से 30 हजार रूपये प्रति हैक्टेयर तक मिल सकता है।

सम्पर्क सूत्र **विभागाध्यक्ष**
तकनीकी हस्तांतरण, प्रशिक्षण एवं उत्पादन आर्थिकी विभाग
केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर – 342 003
दूरभाष कार्यालय : 0291–2786632

सौजन्य : **कृषक सहभागिता द्वारा क्रियान्वित अनुसंधान कार्यक्रम**
जल संसाधन मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

Evergreen 2747767